

DPN 6277

Title: 1. अगस्त्य व्रत विधान / AGASTYA VRATA VIDHANA
2. ~~पञ्चक दान विधि~~ / PAÑCAKA ŚĀNTI VIDHI
3. सूर्य पूजा विधि / SŪRYAPŪJĀ VIDHI

Run. No. 6968

Cat. No. 22

Micro. No.

Subject ~~कर्मकाण्ड~~
Karmakāṇḍa

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 x 8.2

Folios 31 Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 820

~~वंशीधर शर्मा~~
Ruler / place

Illus. :

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

1. अगस्त्य व्रत विधानं लिख्यते ॥ इत्यगस्त्य व्रत समाप्तं ॥ अगस्त्यया थाण्डिलपूजा विधिः ॥
इति अगस्त्यया थाण्डिलपूजा विधिः ॥
2. पञ्चक दान विधिः ॥ इति पञ्चक दान विधिः ॥ शुभम् ॥ 3. अथ सूर्यपूजा विधिः लिख्यते ॥
इति सूर्यपूजा विधिः समाप्तः ॥

पंचकवक्षत्रे मंत्रात्म्य

श्रीगुरुमवा
रंगकुरुक्षेत्र

शान्ति श्रीवामश

यामाताममतामारा॥
मापनकदगद

दगगौरिगारांग॥

श्रीगुरुमवा
श्रीसावदाशेश॥
श्रीसनस्येशेश॥

ॐ नमः ४३ गाल ॥ यं च कस्य दात विधि ॥ अथादि. पूष्यराज
 तयजमान न ॥ वाक्कलन च वृत्त वाक्क ॥ अयमानस्य अमृक ॥ अमृक
 अमृक तामाहं मम उक्त्वा विष्णु महो गतु वरुण पुसन्न दाना.
 यं च कत रुक्म अमृक मग्न दाया पुष्प नि काम नया उक्त्वा
 विष्णु महो गतु वरुण यजा कर्तुं सुयायि अर्धो नमः ॥ पूष्यरा
 ज नमः ॥ वाक्कलन च वृत्त वाक्क ॥ अत्र नमस्कृत्या साधको
 पूजा मंत्र ॥ तत्ता दाना वृत्त ॥ ॐ नमः ॥ यं च लोक यान ॥

॥ मास ॥ उक्त्वा हं सास नाय नमः ॥ पूष्य २ ॥ अर्ध ॥ यीर्षी यीर्षी यतु
 वाक्क ॥ उक्त्वा लं च वृत्त नात न ॥ हं स्यात्तं च विद्या ॥ दत्ता रुद्र क
 मलु लं ॥ अर्ध पूष्य २ ॥ उक्त्वा यज्ञो गं ॥ अर्ध ॥ यद्रया नि निग्वतु
 मर्त्ति मर्त्ति स्या न निवा सि त ॥ सुवि द्वा त्र को नित्यं तस्मै वक्त्रा
 त्मन नमः ॥ अथ गन्ध ॥ मृदु ॥ विष्णु वेग वृज स नाय नमः ॥ अ
 र्ध ॥ अर्ध नमः पूष्य ली का कं रुद्रा दग गे यत ॥ विष्णु दाम वृती का
 गं कृष्ण नमः पूष्य २ ॥ अर्ध पूष्य २ ॥ गी नित्यदा ॥ अर्ध ॥ यत्न ग

15
विपतिं दध. मननं नाम विष्णुं पाताले च सगतिं य. मतर्कय
नमाम्यहं॥ जगन्मादि॥ यव॥ तूडा यवृषासनाय नमः॥ श्री नै॥
ॐ श्री नै वृषासनाय नमः॥ त्रिभूलं व्यालं विष्णुं॥ जगत्पुत्रावदातव.
चतुर्भुजं त्रिभुजं च नै॥ श्री नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥ न
मस्तु वायेति॥ जगन्मादि॥ स्तुतया॥ ॐ द्वायं नै वृषासनाय
१॥ श्री नै॥ नै वृषासनाय नमः॥ हस्तवर्णं विष्णुं॥ जगत्पुत्रावदातव.
नयनं॥ वज्रपाणिं विष्णुं॥ श्री नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥

ॐ द्वायं नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥ नमस्तु वायेति॥ जगन्मादि॥ स्तुतया॥ ॐ द्वायं नै वृषासनाय
१॥ श्री नै॥ नै वृषासनाय नमः॥ हस्तवर्णं विष्णुं॥ जगत्पुत्रावदातव.
नयनं॥ वज्रपाणिं विष्णुं॥ श्री नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥
ॐ द्वायं नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥ नमस्तु वायेति॥ जगन्मादि॥ स्तुतया॥ ॐ द्वायं नै वृषासनाय
१॥ श्री नै॥ नै वृषासनाय नमः॥ हस्तवर्णं विष्णुं॥ जगत्पुत्रावदातव.
नयनं॥ वज्रपाणिं विष्णुं॥ श्री नै वृषासनाय नमः॥ श्री ग॥

॥ माता पूषा ॥ उं पूष माता मिमांसा देव गृहाण धनवृद्धयः । दूर्जनसामना
गीगः ॥ ४ ॥ स्विगस्तु दिवाकन ॥ ॥ गस्तान ॥ पूष द्वादशमास्यां उरुमं
निविसेत् ॥ गृहाण देव देव भ्रातृभ्या यत्नमानसः ॥ ॥ दमन ॥
सुगन्धं दमनं पूषा सुप्रियं कामसंहर ॥ गृहाण त्वं दिवानाथ सुप्र
सीद युष्माकं ॥ ॥ यत्र स्नान ॥ यद्वा सतयं दहसु पुद्गलं यद्वा
चन ॥ ॥ दंयं गृहाण त्वं यद्वा संगानं दयुष्मा ॥ ॥ उत्पल स्नान ॥
उरुमं सर्वं पूषा त्वं सर्वं देव प्रियमिमांसा गृहा ॥ ॥ उत्पल पूषा त्वं

गव्यं प्रोत्थे समर्थिनी ॥ ॥ दिय दूर्वाक्रिग ॥ उं यथाग्निं खापुग्निं खातिर्य
अदूर्वास्तु भ्रातृभ्या त्वं संगानं सोऽग्नौ दहि दूर्वाक्रे गे नमः ॥ ॥
दंयं स्नान ॥ उं यम्यं कं हमवन्तं रं यम्यं कं ददता प्रियं यम्यं कं व
सुगन्धं दं गृहाण देवि रावसा ॥ ॥ दिय दूर्वास्तु ॥ उं दूर्वा दहि ऊ
यं दहि यत्नं दहिय गस्तान ॥ ॥ दंयं कं दमया दहं पूष गं दं गृहा
यत्र ॥ ॥ द्वास्तु ॥ उं न कं पूषा नरा देवा नाना नैका न ह विगः
कनवी न ऊवा पूषा ॥ ॥ दयास्तु गं दिवाकन ॥ ॥ अस्तु स्नान ॥ जागो पूषा

सुगंधं च, सुखं च, भादिर्गुणः। त्रयोऽथ तन्महा लोद, पूष्यास्तमूह माह
मं॥ ॥ ताना पूष्या॥ उं मालागादिसुगन्धानि, मात्यानि विविधानि च। मया
कृतानि यथाार्थं, पूष्या न्यागानि गृह्यन्ते॥ ॥ ध्ये॥ उं वृष्या लोद
यानंदं, दहं मंदव हाजनं, सांया निगं वसहं, युगीकृता गता भनी॥ ॥
दाय॥ उं ज्योतिर्गेल मयदीयं, कृतश्चातिहल युदं, हक्या यनागमादि
य, गृह्यन्ते गीर्जमूहमं॥ ॥ नेव द्य॥ उं वल्गु गन्धे तसा यगं नेव द्य
युक्तिवद्वनं, स्वाद्यं हाद्यं गथा परं, लेक्यं वा र्थं यगृह्यन्ते॥ अथ

मन॥ ॥ यकान॥ उं यकाने कीर त्रयिर्गं, दधिक्रो दुसमस्त्रिर्गं, भ
र्क्याद्युग युलं च, गृह्यन्ते दायगां विहा॥ ॥ रुल॥ जदि मादिह
लयर्कं, यथा कालसमूहं, हक्या युदहं लाका नीं, जीवने युति
गृह्यन्ते॥ ॥ गाम्बूल॥ उं गाम्बूलं र्थं लाका नीं, सुखं र्जनका न कीं।
दवला कयि र्थं दि र्थं, दिने भयुति गृह्यन्ते॥ ॥ जगु गन्धेदि॥
गगं यज्जनं॥ दूदयसदि॥ ॥ गगं जगु यगु जगु गं कियज्जनं॥
उं कामदा ये तम॥ उं मा कदा ये॥ उं सिद्धिदा ये॥ उं हा गदा ये॥

ॐ शिवाय ॥ ॐ दिवाक नाय ॥ ॐ सुखाय ॥ ॐ जगती न न मिश्राय ॥ ॐ ज्ञा
कर्वल्लय ॥ ॐ सुहाय ॥ ॐ सुहाय ॥ ॐ गय नाय ॥ ॐ न
वय ॥ ॐ जल काय ॥ ॐ ज्ञा नाय ॥ ॐ द्वादश मासा दिश्याय ॥ ॥
ॐ बुद्ध ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ नृपाय ॥ ॐ दयादि ॥ ॐ ब्रह्मादि ॥ ॥
कल आदि ॥ ॐ यव वृक्ष जल ॥ ॐ उगका काय माल साधन ॥ ॥ नृणां
पदान ॥ वाक् ॥ ॐ ज्ञा (ध्वगवाह ॥ ॐ द्यादि ॥ ॐ मूक (मंगु यजमान
स ॐ मूक कामनया यथा ॥ ॐ मूक हल या कि कामनया ॥ ॐ सुखाय ॥

कल स्याप त्रिभिर्गदीपदान संयुक्तं ॥ ॐ गवर्ग आसुखाय ॥ यथा संस्था
प त्रिभिर्गदीपं द्यु गित पुष्पा लयिष्य ॥ ॥ ॐ गुरु ल गद गसां धन ॥ ॐ
यथा गद गुरु गान गेया विवि ॥ ॥ ॐ यथा द गुरु जायाय ॥ ॥ ॐ क क वे ॥ ॐ द्वा
गम रु य ॥ ॐ द मा सनं ॥ ॐ पूष्य ॥ ॐ नृवं वाक्कन ॥ ॐ द्याया द्यादि चन्दन सिद्ध
न ॥ यज्ञोपवीत ॥ पूष्य ॥ ॐ य दीप ॥ ॐ वेद ॥ ॐ जगन्मादि ॥ ॥ वाक् ॥ ॐ निलक
ग जल मादाय ॥ ॥ ॐ द्या (ध्वगवाह ॥ ॐ द्यादि ॥ यजमान स ॐ मूक काम
नया ॥ ॐ सुखाय ॥ ॐ द (ध्वगवाह ॥ ॐ वेद ॥ ॐ देव ग म ह मूक्त ॥ ॐ ॥ ॐ निवाक् ॥

कात्रलमीग, मरुयप्रिगुलभयग॥ सुश्री साकसुयुक्तात्वं, विहृषल्वन
जामयै। विगयत्वममासाद्य, वत्सल्वं वामयेवुर्व॥ तमागुलमयैसर्व
लकाथदिधससुह। गदेवभकय४ संख्या, वगसासा एकवदिगा॥ गलभेव
मरुयादेवा, वृद्धाद्याभकलीकया४। आदियादिउहासर्व, त्वदंग४
सादुभकिका४॥ निमयादिकुर्ययाय, कालरूपसुभवहि। नाभियागम
कुरुनी, यदिरूपसुभवहि॥ यहायुजयगहावे४ संयुजयुनिनिभ४॥
वुक्तावेन्दुनिनिभया, नन्याभनाकसदन४॥ सिद्धिगैधवयकाभे, म
मायोहं पायकम्रीहं पापात्मापायसंभव, नाहिमापुण्डरीकाक्षोसर्वपापोहरोभव॥

निगागमहातमनु॥ रुगानिसद्वल्लोकानाः मयसर्मकतात्थयि॥ यनल्व
वाद्युगिनन, युजिगागयिरुत्रिग४। वुक्तादयद्विजन्माना, नदहंगव
वनेरुल॥ नूतिटिक्कायमारुलु, त्वमेवभनर्गसम। क्रियगैग४यनेपा
हि, मामनन्येगतिवत्रा॥ पायाहमियादि॥ यथायाल्लति॥ यजमनस
यथाभक्तकुरुलप्रापिकामनयाग्रहभयिलकसंख्यायनिमिगदी
यदानहैयुधधिया, नृपगभ्यादि॥ निमल्लना, स(र्जन)॥ मलुलसुयु
व्यभिन्नसिनिभय॥ मलुलविसर्जन॥ ॥ देवदक्षिणा॥ वारभनयुज

न॥ ॥ ॐ ॥ दवाभीष्टादि॥ ॥ दवयालखनयजमानातिषेक॥
चन्दनादिज्राणीवाद॥ ॥ न्यासत्रिकाय॥ ॐ उद्वयं॥ देवविसर्जनी॥ ॥
सूर्यसाक्रिधाय॥ ॥ ज्ञातमनी॥ विष्णु३॥ ॐ निसूर्ययज्ञविधि॥ समाप॥
स्नानसूक्तकाय॥ नूनकयागं यज्ञायथ॥ वाक्कुरुकविष्णु॥ ॥ लक
मगकायककनयागं थ८थयज्ञ॥ ॥ ॥ गुरुमस्तु॥

15

10

5

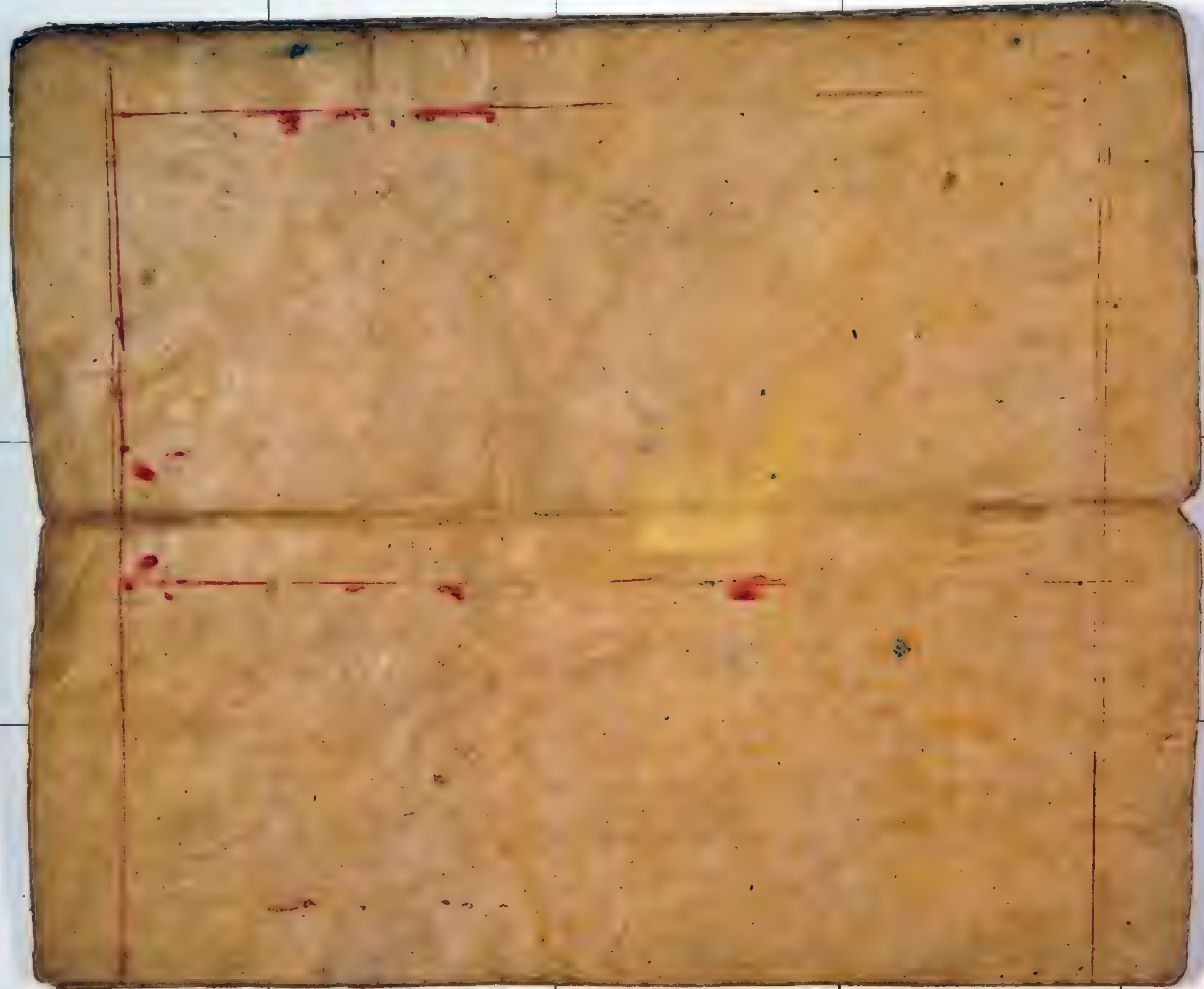
0

5

10

15

20



15

10

5

0

5

10

15

20



15

10

5

0

5

10

15

20



ॐ नमो भगवते ॥

सर्वविघ्नहर्त्रे ॥

अगस्त्यवर्ग लक्ष्मणाय नमः ॥

कमिद ॥ उं नमावस्तु भय ॥ उं सकयुक्तुकि ॥ उं असोयसासा ॥ ॥ नूनि
दानावन ॥ ॥ विष्णुवद ॥ उं सकयुक्तुकि ॥ उं वक्रयस्तनी ॥ उं वाक्क
भास ॥ उं वृहन् ॥ उं वक्रयस्तनी ॥ उं मितावत्रु ॥ उं गावसा ॥ ॥
कलशमा ॥ उं आकिध ॥ वलि ॥ उं असंखाना ॥ ॥ गज ॥ उं गजानी
खा ॥ ॥ गज ॥ उं गज ॥ ॥ १॥ द्रुवाधिवा ॥ उं दृगं दृगयावान ॥ ॥ उं अरु
ष्ट ॥ १० ॥ उं गगनमिन्द ॥ १० ॥ उं वाक्कभास ॥ १० ॥ उं अरुमासा ॥ उं नदगय
१॥ उं यागयाग ॥ उं अरु ॥ उं अरुयदकि ॥ उं नून्दा ॥ ॥ उं सम्वक्त

या ॥ उं समिग ॥ उं श्रीधन ॥ उं धूपसि ॥ उं गजासि ॥ उं या ॥ १॥ रुतनी
॥ उं अन्नयन ॥ उं स्वस्तिनून्दा ॥ उं यय ॥ १॥ यि ॥ उं विष्णुययाठ ॥ उं
अमिदवेता ॥ उं यो ॥ १॥ भकि ॥ उं अम्वक ॥ उं मनार्द्रुमि ॥ यमिष्टा ॥ ॥
अगगन्धि ॥ ॥ गगवगमानर ॥ ॥ रुतनअसन ॥ रुतनननठन ॥ रु
रुतनननठन ॥ ॥ यगसायक ॥ उं ददयाय ॥ १॥ दिरवठ ॥ १॥ अरुयाग
सखानननक ॥ ॥ गज ॥ १॥ वक्रयस्तनी ॥ १॥ गज ॥ १॥ वक्रयस्तनी ॥ १॥ निर्मदासिन्धुकाव
नी ॥ १॥ अलसिन्धुकाव ॥ ॥ अरुयाग ॥ १॥ वक्रयस्तनी ॥ १॥ उरुयगिरवन

लक्ष्मयविष्णुः। एवम् आत्मानमादयं सर्वपापयुनाशनं ॥ आनयूष्यं
॥ ॥ धर्मेयउयावथवर्गं कुरु ॥ ॥ उया ऊलिमनु ॥ उकाशयूष्ययमी
काशं, अग्निमात्रुत्संरुवः। मिश्रवपुष्याः ४ युर कुमुद्याननमाः ३ ॥
॥ स्नानं ॥ यावनं सर्वगीर्थाणां गंगदिसकसागमे। स्नानं समर्थं गेयनं सति
लेः स्नाययाम्यहं ॥ ॥ वरु ॥ कामकयासउं वरुं हवधियुषाम्भवं। गृहानमू
नियुः गंग गृह्णामीत्यनमश्च ४ ॥ ॥ चन्दनं ॥ मलयादिसमूहं चन्दनं हिम
गीतले। सर्वसम्यक्दिदं याकं चन्दनं पुनिगृह्णामी ॥ ॥ सिन्दूरं ॥ दीपकसस

मूल्यनं विपुलं कुरु मरुतम् ॥ मृद्वि सिद्धि वरं दानं गृहानमू नियुज्यते ॥
॥ ॥ दिव्या उ उमका ॥ कर्णाग कर्णिकसूर्यं सुखगं गिगुणीकं। गृह्णामी सर्वला
काणां यक्षा यवीर्गं गृहानमू ॥ ॥ नसाक ॥ गन्धसोराग्यदं नाथ सर्वदया
हियु विना। सर्वकामयुदानुर्ध्वं गृहानमू गन्धचन्दनं ॥ ॥ मालस्नानं ॥ माल
यादिसुगन्धानि माल्यानि विविधानि याम्यादगानियुज्यानि गृह्णामी कुरु
यानय ॥ ॥ गस्नानं ॥ जागी कुरु शिवाजीमा सवनी वदमालिका। कुरु मयु वि
कायूष्यं पूष्यसकनमास्तु ॥ ॥ रुगसयु ॥ सोरिगं येव कुरुमास्तु सर्वयोषि

विनाशनं। सर्वसूत्रविनाशाय, गृह्णीतु सर्वसूत्रं ४॥ ॥ त्रिनिखान॥ मदी
वीर्यवनायानि, युष्मदाणी समन्विता। नानावर्णसूत्राणि, जानीयुष्यं गृ
हाहम॥ ॥ दियोसुतु, दियोज्ज्वल, दियोद्धारुल॥ नो जयूगीनमस्तु
त्यं, एषियुगीवनाशनं। लायामूडा जगन्माता, सगीनां प्रवनासगी॥ यथा कुरु
लकामाय, इवोपूष्यादतानिच। गृह्णीतु नमूनियु (अश) लायामूडायानमः ४
॥ ॥ यज्ञ॥ एतत्पुमयादरुं, अखलं कदाचनमदिका। सयं जन्मात्किं नया
यं, मुक्ताचक्रवतीरुव॥ ॥ उरुल॥ उनामन एनिर्मूकी, यत्र नृक्षयनांग

तिं। गृह्णीतु नमूनियु, गृहाहमस्तु ४॥ ॥ धवन॥ दमनं मदनादूत
सूत्रं च दनरुषिणं। दानिदु गत्यमुच्यते, दमनं च गृहाहम॥ ॥ काणव॥ का
णयुष्ययमीकाणं, अग्निर्मानुसं च व॥ मिश्रवत्तु लयायुगं, क्रूरयाननमो इस्तु
न॥ ॥ उलङ्गी॥ दर्शनाद्वर्द्धनयुष्यं, स्थर्षनात्प्रोयनाशनं। उलङ्गीयुष्यदयु
ष्यं, गृहाहयनमश्नुव॥ ॥ नन॥ यूनं॥ उं कुरुयुगय॥ उं कुरुयुगय
२॥ उं द्वायनयुगय॥ उं कलियुगय॥ उं अयुगय॥ उं यद्वदय॥ उं
सामवदय॥ उं अथर्ववदय॥ उं अगस्त्य॥ उं कृष्णाय॥ उं कल

15
ॐ वाम ॥ ॐ क्रूरानय ॥ ॐ अगस्त्यमूर्य ॥ ॐ अगस्त्यमूर्यवाय ॥
ॐ मिश्रवत्सल ॥ ॐ राजयुक्ता ॥ ॐ लायामुद्रा ॥ ॐ अष्टाध्याय ॥
॥ ॐ गगनाय ॥ ॐ रुद्राजय ॥ ॐ विष्णुमिश्र ॥ ॐ उमदत्त ॥ ॐ
काश्याय ॥ ॐ वलिष्ठाय ॥ ॐ अरुणाय ॥ ॐ दवाय ॥ ॐ आदिद्यादिन
वग्रहाय ॥ १० ॥ ॐ अष्टाध्यायि अष्टाविंशतिनक्षत्राय ॥ २८ ॥ ॐ मयादिद्याद
नक्षत्राय ॥ १२ ॥ ॐ विष्णुदिशस्य विंशतिनाक्षत्राय ॥ २० ॥ ॐ उक्ता
द्यादि अष्टमाहकला ॥ ८ ॥ ॐ अष्टाध्याय ॥ ॐ वल्लभ ॥ ॐ आसाय ॥ ॐ हनु

मग ॥ ॐ विष्णुमिश्र ॥ ॐ कृपाय ॥ ॐ यक्षनामाय ॥ ॐ मार्कण्डेय ॥ ॐ
कृपायालाय ॥ ॐ गणयुक्त ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ आगिष्ठे ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ
अमय ॥ ॐ अमाय ॥ ॐ नैर्मृग ॥ ॐ वरुणाय ॥ ॐ वायव्य ॥ ॐ कृष्णाय ॥
ॐ अमनाय ॥ ॐ अर्द्धाय ॥ ॐ उर्द्धाय ॥ ॥ ॐ अननाय ॥ ॐ वासुकी ॥ ॐ
गङ्गाकाय ॥ ॐ कर्काटकाय ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ महायमाय ॥ ॐ शिखयालाय ॥
ॐ कलिकाय ॥ ॥ ॐ पूर्वसमुद्राय ॥ ॐ पश्चिमसमुद्राय ॥ ॐ दक्षिणसमुद्र
॥ ॐ उत्तरसमुद्राय ॥ ॥ ॐ मन्त्राय ॥ ॐ मन्त्राय ॥ ॐ केलीसाय ॥

ॐ मलयाय ॥ ॐ मन्त्राय ॥ ॐ मादनाय ॥ ॐ माहन्त्राय ॥ ॐ श्रीयवेनाय ॥ ॐ ह्रम
 कृणाय ॥ ॐ मेना कयवेनाय ॥ ॐ सर्वयवेनखा ॥ ॥ ॐ कीना दार्णवा
 य ॥ ॐ द(प्रा) दार्णवाय ॥ ॐ रुद्रा दार्णवाय ॥ ॐ लवना दार्णवाय ॥ ॐ
 काया दार्णवाय ॥ ॐ मदीला दार्णवाय ॥ ॐ वसा दार्णवाय ॥ ॐ सफस
 मूडखा ॥ ॥ ॐ उमृदीयाय ॥ ॐ कृषदीयाय ॥ ॐ साकदीयाय ॥
 ॐ काक्षदीयाय ॥ ॐ गोलदीयाय ॥ ॐ गमधदीयाय ॥ ॐ यूषनदी
 याय ॥ ॐ सफदीयखा ॥ ॥ ॐ रुलाकाय ॥ ॐ उदलाकाय ॥ ॐ स्व

लाकाय ॥ ॐ मरुलाकाय ॥ ॐ जनलाकाय ॥ ॐ गयलाकाय ॥ ॐ सत्यला
 काय ॥ ॥ ॐ कालायेनम ॥ ॐ गृष्टि स्थितक काये ॥ ॐ सर्वदवाय ॥ ॐ
 जगत्समृद्धय ॥ ॐ हृदयाय ॥ ॐ निरस ॥ ॐ निखाये ॥ ॐ कदवा
 य ॥ ॐ नमराय ॥ ॐ जम्भाय ॥ ॐ आवादनानि ॥ ॐ विदवस्तु ॥ ॥
 गंगा कलमयूता ॥ ॐ वज्र (न) ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ सदा शिवाय ॥ ॐ जगत्समृद्धय ॥
 ॐ यमूनये ॥ ॐ सनसखे ॥ ॐ गुरुये ॥ ॐ कोशिके ॥ ॐ वाग्मये ॥ ॐ वन्द्यराज
 ये ॥ ॐ मार्कण्डेय ॥ ॐ काश्यपाय ॥ ॐ वशिष्ठाय ॥ ॐ व्यासाय ॥ ॐ (ग) मसाय ॥

ये ॥ ॐ कविलादियस्स (गमाटकल्या ॥ २॥) ॥ युद्धउजमका खान ॥ ॐ हृद
यादि ॥ ॐ नि (गमा) सयूका ॥ ॥ गमादुखायिखायूजन ॥ ॐ वेदिवालज्ज
दिस्सानदवकुलदवगल्या ॥ ॐ ॐ हृदवग्या ॥ ॐ कुलदवगल्या ॥ ॐ
सगहस्यविवात्रया ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ उजमका खान ॥ ॐ हृद
यादि ॥ ॐ निदुखायिखायूजाविधि ॥ ॥ गमादवेस्सयूजन ॥ ॐ उजमका
॥ ॐ गमाय ॥ ॐ सनातनाय ॥ ॐ विष्णुव ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ अग्निव ॥ ॐ
दकाय ॥ ॐ सवर्ककाय ॥ ॐ गमाय ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ अयस्स

य ॥ ॐ उजस ॥ ॐ व्यासाय ॥ ॐ कात्यायनाय ॥ ॐ वृहस्पत्याय ॥ ॐ ग
याय ॥ ॐ लिखिताय ॥ ॐ हविताय ॥ ॐ अग्न्याय ॥ ॐ याज्ञवल्क्याय ॥ ॐ
मार्कण्डेयाय ॥ ॐ वेदवनाय ॥ ॐ गमादित्याय ॥ ॐ कोलाय ॥ ॐ (गमा) का
य ॥ ॐ वाधाय ॥ ॐ वसनाय ॥ ॐ धिपिलाय ॥ ॐ सालकाय ॥ ॐ मा ॥ ॐ
याय ॥ ॐ साकल्याय ॥ ॐ सर्वप्रविद्या ॥ ॥ ॐ मित्रवत्सलाय ॥ ॐ गय
स्सनाय ॥ ॐ असुरघाताय ॥ ॐ विषदहनाय ॥ ॐ काशवृ ॥ ॐ विद्या
य ॥ ॐ नृमृविद्या ॥ ॐ वीर्यव्याय ॥ ॐ लोयामुदाये ॥ ॐ दक्षिदि

मिथितिराशा॥ उं नत्तमलुलायशा॥ उं अगस्तु मूर्कयनम॥ ॥ उं प्रकियदादि
मिथितिराशा॥ उं यक्षया लुवराशा॥ उं स्वजेयिशा॥ उं मर्त्यायशा॥ उं यागालायशा
॥ आवाहनादि॥ ॥ द्रियाधुनि॥ उं द्रयाय सर्वदयानां महाजागधनिर्दय।
गृह्णानां सर्वरायन प्रीयनां कुरु संरुव॥ ॥ काण्ड्युलिकादीय॥ उं काण्ड्यु
लिकुरुवदीयं यं यनयुक्तं समुद्धलं। यक्षया याचनादव गृह्णानां यायनामि
या॥ ॥ धनमाहनीरु॥ ॥ रुले॥ उं रुलं विविधसंसारं मनीनामनम
कर्म। गुहूनाथगृहाणदं गृह्णानां रुलमूर्कम॥ ॥ ओम् धी॥ मनीययिंय

लीजावि शुकमनालदंगकं। जानीरुलहविडाच उषधं युनिगृह्णानां ॥
॥ यकाने॥ लुका लुवा मिश्रं जलिका मूर्किका गथा। मर्कवावर्किका
वाष्टं यकानेयुनिगृह्णानां ॥ ॥ वीदि॥ यवाङ्गानिमायानि कालमायक
जावकं। यानयुक्तं किल यिव वाहिसयनुमास्तुत॥ ॥ नेवय॥ यदसादि
समायुक्तं सर्वसाया मयानं। युथार्थकामदयैव नेवययुनिगृह्णानां ॥
॥ ॥ गान॥ उं गृह्णानां मर्कं गृह्णानां वदना कालकालकं। गृहाण सर्व
लाकानां प्रीयनामूर्कम॥ ॥ रुदं रुलयुथादि॥ ॥ यक्षाधुन

15
कीवयोन ॥ गीतवाद्यकन ॥ आस्थानश्रवण ॥ ॥ धनलिनसुवाङ्गनदा
वमाउद्गुय अंगस्यदर्शनयाय ॥ धनमदकाथासदय्याकअर्धयाय ॥ शिव
सद्गुल्लेखरुतसर्व अद्वयन स्वान ॥ धर्मनिनअर्धविय ॥ ॐ श्रुवावाह
॥ ॐ अद्यादि ॥ ॐ यनोदिगानियायानि आयेनसर्वयाधय अयंकुर्गवयायान
नि अर्धागस्त्यनमानमः ॥ यकमानाना अंगस्युगनिमित्तार्थवृद्धमर्धयदा
हस्वाहा ॥ ॐ अयदीनकुम्भग्रामि सिद्धार्थदधिगुर्त ॥ शिवनायसमादाय स
यर्थरुतवन्दन ॥ जानूयाधनवीधत्वा अर्धयाधनिवेदय ॥ ॐ अयपूर्वद्विय

5
ॐ हृदि हृदि यस्मात्सुखं प्रियं धर्मज्ञानं हृदि हृदि धानि न स य हृदय ॥ ल
यर्ध ॥ ॥ दायनहास ॥ ॐ मनार्द्धमि ॥ यनिष्ठा ॥ ॥ यद्वासनमलुनयावक ॥ जा
य ॥ ॥ कृष्ण ॥ ॐ नमो अंगुलाय ३ ॥ वागायीरुक्ताय न समुद्र ॥ विर्गयना ॥ ४ ॥
लाया मूढाय नि श्रीमान् यासीनमेनमानमः ॥ नमस्तु अंगुलाय कृष्णाय न्याय
न नमः ॥ नमस्तु नूयाया सुनद्यानाय नमः ॥ नमस्तु विषनाशाय दिशिद
दिशसिक्किगा ॥ नमस्तु नागनाशाय ॥ नमस्तु नाशाय नमः ॥ नमस्तु दहदसाय कम
धुत्तु धनाय च ॥ यदीम्ययनमदव अंगुल उक्ता गजस ॥ नमस्तु योगनूयाय महात्र

15
10
डायननमः॥ वातायानुदगायन, ऊर्ध्वगजायननमः॥ नमस्तु भद्राय
बुधाय विनाशिन ॥ नमस्तु शिवाय, कृत्तिकाय नमः॥ दयामयाय देवा
य, क्लान्त्याय नमः॥ सर्वनागहृदय, सर्वबाय हृदय नमः॥ नागयदुखदायि
न, अलङ्क्रीमलनाशन ॥ सर्वसंयुक्तदालङ्क्री, सर्वसौभाग्यदायकः॥ धर्मा
र्थकाममादौ य, माययुज्यः॥ ४ छियं ॥ नाऊनाऊं ध्वनंदाहुं, यद्वयवर्णिदा
यकः॥ नमस्तु ध्यायत्रयाय, लायामुडाय नमः॥ ॥ कलशिया ॥ उमासह
स्रुविकागवर्धुं, दवाधिनार्थवृषासनकं ॥ विशूलहस्तकिरयाकुमाला, मृदु
ऊव

ऊर्ध्ववेद्यमामिनोमि ॥ ॥ गङ्गा ॥ विष्णुश्च नायवीनाय, विष्णुत्रयाय नमः॥ स
र्वविद्युदहृदय, सर्वभक्तिं नमः॥ ॥ वलि ॥ नित्यानन्दयनं भक्तं, नि
श्चयः॥ निवामय ॥ यामातीतयनं वृत्तं, रत्नवर्कनमाम्बुदं ॥ ॥ अग्राम ॥
वन्दितासिवशिखन, विष्णुमित्रं नऊङ्गना ॥ कविपदमयाय, उमायादू
कृगंकुगं ॥ ॥ दूयार्थिया ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, शिवसर्वार्थसाधिक ॥ शर्व
गुर्विक्रमो नीलनायगी नमः॥ ॥ यायादयाय कर्मोर्ध्व ॥ ॥ यजमान
स्रुगस्तुवगनिमित्तार्थवृताश्च नविधे, अग्न्यादि ॥ ॥ मञ्जुलसयाद

खाननकुचक ॥ मलुलसनक ॥ लाहानसिचक ॥ दवदकिधमगयक ॥ वांम्रध
यूजा ॥ दकिधमदान ॥ ॥ दवाधीधदि ॥ ॐ सकपृषय ॥ ॥ न्यासलिकाय ॥
दवादिविसर्जन ॥ ॐ उदयनमस ॥ ॥ सूर्यसादिथय ॥ ॥ यऊमानादि
धक ॥ नसकेनग ॥ ॐ दवसुखा ॥ यन ॥ ॐ यददक ॥ सिधुमादनी ॥ ॐ त्वंवि
सदा ॥ ॥ सिधुमूढ अर्थस ॥ गुत्रुस्वानविय ॥ ॐ श्रीधन ॥ ॥ गगव
ल्यादिक्काय ॥ यउऊ यिनयक ॥ वलिधनस ॥ ॥ ग्रामसायाक ॥ इवायिवाकाय
॥ अगस्तकलगासकाय ॥ ॥ धर्मनियनि कीनानयासन ॥ ॥ पूरुगस्तुवनसमाय ॥
याददीयुक्तदृष्टा गाददीलिचिगंमया ॥ यदि शुद्धमे शुद्धवा ॥ धनी यमरुद्धये ॥

अगस्तयाथलिलयूजाविधि ॥ अथादि ॥ यऊमानस्य थलिलार्चनक ॥ सूर्यार्च
नमः ॥ यूर्य ॥ ॥ न्यासार्चयायूजा ॥ आसन ॥ ॐ आधायासादि ॥ ॐ धर्मादि
॥ ॐ यमासनायनमः ॥ ॐ कृष्णासनाय ॥ ॥ यान ॥ ॐ अगस्तुमुनिमादुलदकिधम
दिष्टपविदि ॥ ॥ पुन्रपुन्यवेनागसां यउवाद्रुमदादन ॥ ॥ विष्वाङ्गिनोरुवा ॥ यऊ
शुक्रामनवनमनि ॥ लवविधमूनवूय ॥ ययत्यनमनयिग ॥ सर्वयायेधिनिर्मका वि
बुलार्कसगकनि ॥ ॥ यानयूर्य ॥ ॥ ॥ यया ऊर्ध्वलि ॥ ॐ कौर्ण्डाके ॥ अगस्त्यायकृष्णाकृवा
यलायामूजायनयसादा ॥ ३ ॥ ॐ सांसाकिन्ये ॥ ॐ कांकाकिन्ये ॥ ॐ लांलाकिन्ये ॥ ॐ

यचकुङ्कुमाय, रुचन्दवर्द्धयशुषीव्यजाय । कायुव्यशवायमहादवाय, संसान
 इ०वावृवगानमाय ॥ अगुगन्धादि ॥ ॥ वृत्तिअगुगुयाथलुलार्चनयुक्ता ॥
 विधि० ॥ ॥ संवत् २० योषष्ठकश्यादध्यानि (थोनादिनीनकगुष्ठकयाग
 आदित्वावधकृद्ग्रीवसीधनगर्मदानज्वादिहिमसर्वदो (थवायवृद्धदिनश
 ना ॥ ॥ शुभ ॥ दर्शनानलमानन, कलाबहुगतादले ॥ सयजकागिवामुदी वाकसम्
 रुम ॥ उयनयनया सिलागकना ॥

स्वानवा १
 कयुलि
 म्याग
 मास
 सास
 अकग
 गिकाधकस
 कामालकमल
 युजाकायममाल ॥ इवालाव



कलस कागवाग्याव
 गीथलेखने श्रीहीकसगान
 कायक, कलगागानम
 योग, युजन ॥
 मन्त्र
 विधालि
 जातिलि
 उकमाल
 लवद
 इवालाव
 जितमल
 हलउ धनउषधी ॥

यचकुङ्कुमाय, रुचन्दवर्द्धयशुषीव्यजाय । कायुव्यशवायमहादवाय, संसान